धाराप्रवाह पठन

रविशेखर वर्मा

यह लेख पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में धाराप्रवाह पठन कौशल के बारे में है। इसमें बताया गया है कि बच्चे धाराप्रवाह पढ़ना सीखने से ज़्यादा उद्देश्यपूर्ण पढ़ने के लिए उत्सुक होते हैं। इस प्रकार पढ़ने से वे स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित होते हैं। सही अर्थों में धाराप्रवाह पठन क्या है; इसमें पढ़ने से जुड़ी क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं; इसे सीखने के लिए किस तरह के पठन अभ्यास प्रभावी हो सकते हैं; आदि के बारे में विस्तार से बात की गई है। इस बातचीत में उदाहरण के तौर पर एक कक्षा में की गई गतिविधि-आधारित प्रक्रियाओं का चरणवार विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। इन गतिविधियों में कहानी, नाटक, कविता, संवाद जैसी विधाओं पर किए गए कार्य के ब्योरे शामिल हैं। -सं.

भाषा की प्रारम्भिक कक्षाओं में धाराप्रवाह पठन विकसित करने के लिए अलग से कोई शिक्षण योजना नहीं होती है। आमतौर पर यह मान लिया जाता है कि अक्षर पहचानने और अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना सीख लेने से धाराप्रवाह पठन आ ही जाएगा। इस मान्यता के कारण अधिकांश बच्चे स्व-प्रेरित स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित होने से वंचित रह जाते हैं।

पढ़ना एक उद्देश्यपूर्ण कार्य है। पाठक अलग-अलग पाठ, अलग-अलग उद्देश्य से पढ़ते हैं। पढ़ने का कोई भी उद्देश्य समझ के बिना पूरा नहीं हो सकता है। जब बच्चे समझकर पढ़ते हैं, उन्हें पाठ को आनन्द के साथ पढ़ पाने की सफलता का आनन्द भी मिलता है। उनकी यही सफलता उन्हें और ज़्यादा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है, और वे स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित होते हैं।

प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों को अटक-अटक कर, एक-एक अक्षर पर समय लेते पढ़ते हुए आपने भी देखा होगा– ए... क... 'एक', स... म... य... 'समय', क में ई की मात्रा 'की', ब में आ की मात्रा बा... त... 'बात', ह में ऐ की मात्रा 'है', आदि। इस तरह पढ़ने से समझने का लक्ष्य पूरा नहीं होता क्योंकि बच्चे की सारी संज्ञानात्मक ऊर्जा वर्ण पहचानने और ध्वनि से सम्बन्ध जोड़ने में ही ख़र्च हो जाती है, और

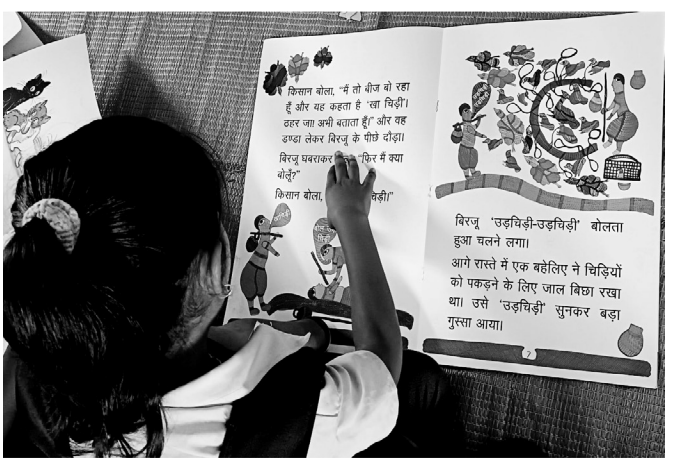

अजय सैनी, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, खुरई

चित्र : हीरा धुर्वे

तब पाठ समझने के लिए ऊर्जा ही नहीं बचती। यदि बच्चा स्वचालितता (automaticity) के साथ पढ़ ले, अर्थात शब्द को बिना किसी परिश्रम के सटीकता के साथ स्वतः ही पहचान ले तो शब्द पहचानने में ख़र्च होने वाली इस ऊर्जा को वह पाठ समझने में लगा सकता है। स्वचालितता के अभाव में बच्चे को एक-एक अक्षर को हिज्जे करके पढ़ना पड़ता है। ऐसा पठन बच्चों को थका देने वाला होता है, और इससे उनमें पढ़ने के प्रति विरक्ति बहुत जल्दी पैदा हो जाती है।

जब हम किसी बात को सुनते हैं तो अर्थ केवल उन ध्वनि समूहों में ही निहित नहीं होता है बल्कि सन्दर्भ के साथ-साथ बोलने वाले का हावभाव, लहज़ा, ध्वनियों का उतार-चढ़ाव, आदि बातें भी अर्थ निर्माण में सहायता करती हैं। ध्वनियाँ हमारे कानों में टुकड़ों में नहीं बल्कि एक प्रवाह में एक साथ पड़ती हैं। यदि लिखित भाषा को वैसा नहीं पढ़ा जाए जैसा कि बोला जाता है तो अर्थ समझना मुश्किल हो जाता है। इसीलिए धाराप्रवाह पठन या स्वचालितता के अभाव में अक्षर-दर-अक्षर पढ़ने से हावभाव, लय और ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ना सम्भव नहीं हो सकता है।

धाराप्रवाह का अर्थ तेज़ गति से पढ़ना नहीं है। समझ तेज़ गति के साथ पढ़ने से सुनिश्चित नहीं होती है। इस सम्बन्ध में वुडी एलन का एक चर्चित मज़ाक़ तेज़ गति से पढ़ने की व्यर्थता की ओर इशारा करता है : "मैंने तेज़ी से पढ़ने की स्पर्धा में भाग लिया, और *वॉर एंड पीस* पुस्तक को 20 मिनट में पढ़ लिया। यह रूस पर आधारित है।" तेज़ गति की बजाय यदि प्रभावी गति, शुद्धता और हावभाव के साथ *वॉर एंड पीस* को पढ़ा जाए तो निश्चय ही 'यह रूस पर आधारित है' से कहीं ज़्यादा समझ हम बना पाएँगे। यह कथन किसी भी रचना पर लागू हो सकता है। कोई कह सकता है कि मैंने *'ईदगाह'* कहानी को 2 मिनट में पढ़ लिया। यह हामिद और उसकी दादी के बारे में है। लेकिन हम जानते हैं कि कहानी बहुत कुछ कहती है। इस तरह धाराप्रवाह पठन में दो चीज़ें शामिल हैं :

शब्द पहचान और स्वचालितता, यानी शुद्धता के साथ शब्द को बिना परिश्रम के तुरन्त पहचानना; और

प्रभावी गति, समझ और हावभाव के साथ पढ़ना।

बच्चों में धाराप्रवाह पठन कौशल विकसित करने के लिए दो प्रकार के पठन अभ्यास प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं :

1. गहन पठन

गहन पठन का अभिप्राय किसी पाठ को बार-बार पढ़ने से है। बच्चा किसी पाठ को अलग-अलग उद्देश्य के तहत बार-बार तब तक पढ़ता है जब तक कि वह धाराप्रवाह पठन के एक वांछित स्तर को प्राप्त न कर ले। यह

प्रक्रिया नीरस और उबाऊ न बने, इसके लिए शिक्षक बच्चों को कुछ दिन का समय देकर किसी कविता, भाषण, संवाद, नाटक या कहानी की स्क्रिप्ट देकर प्रस्तुतीकरण करने के लिए कह सकते हैं। इससे बच्चे दिए गए समय के अनुसार प्रस्तुतीकरण की तैयारी में पाठ को बार-बार पढ़कर गति, हाव-भाव और ध्वनियों के उतार-चढ़ाव का अभ्यास कर सकते हैं। शोधों की समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ है कि बार-बार पढ़ने से शब्द पहचान, शुद्धता, स्वचालितता, समझ और पढ़ने के प्रति रवैया बेहतर होता है (डाउहॉवर, 1994; कून एवं स्टाल, 2003)। इसे कक्षागत प्रक्रिया के उदाहरण से समझते हैं :

कक्षागत प्रक्रिया का नमूना

प्राथमिक शाला की एक शिक्षिका कक्षा 5 में अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं। इस कक्षा में 19 बच्चे हैं। इनमें से कुछ बच्चे पाठ्यपुस्तक के सरल शब्दों को पढ़ने में समय लेते हैं, और कुछ सही उच्चारण के साथ नहीं पढ़ पाते हैं। शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक की छोटी कहानियों के एक पाठ 'The Sky Is Falling' को चुना। यह एक छोटी कहानी है। इसमें संवादों का दोहराव है। कहानी के किसी पात्र या अलग-अलग पात्रों द्वारा ये संवाद बार-बार बोले जाते हैं। जैसे– 'The sky is falling.', 'Why are you running?', 'I am also coming with you.' आदि।

पहला चरण

शिक्षिका ने कहानी के प्रति उत्सुकता बढ़ाने और बच्चों के पूर्व ज्ञान को सक्रिय करने के उद्देश्य से उनसे आसपास के जानवरों एवं पक्षियों के बारे में बात की। उन्होंने बच्चों को अलग-अलग जानवरों एवं पक्षियों की आवाज़ निकालने के लिए कहा। जैसे– कौआ कैसे बोलता है; बिल्ली कैसे बोलती है; आदि। कुछ आवाज़ें शिक्षिका ने स्वयं भी बताईं। शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक के चित्रों पर चर्चा की, और बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रेरित किया।

दूसरा चरण

शिक्षिका ने कहानी को हाव-भाव के साथ हिन्दी में सुनाया। हालाँकि, उन्होंने कहानी के महत्त्वपूर्ण शब्दों, अर्थात hen, tree, rabbit, fox, और महत्त्वपूर्ण संवादों को अँग्रेज़ी में ही सुनाया। ज़रूरत पड़ने पर ही उन्हें हिन्दी में बताया। कहानी को बच्चों के अनुमान लगाने के लिए एक सवाल के साथ अधूरा छोड़ा गया– Guess what happened then...? शिक्षिका ने इस सवाल पर बच्चों की प्रतिक्रिया ली। अन्त में, कहानी को दोहराते हुए प्रत्येक पात्र के संवाद को बारी-बारी से बोर्ड पर लिखा, और बच्चों से पूछा कि इसे hen ने कैसे बोला होगा। उन्होंने स्वयं बोलकर भी बच्चों को बताया।

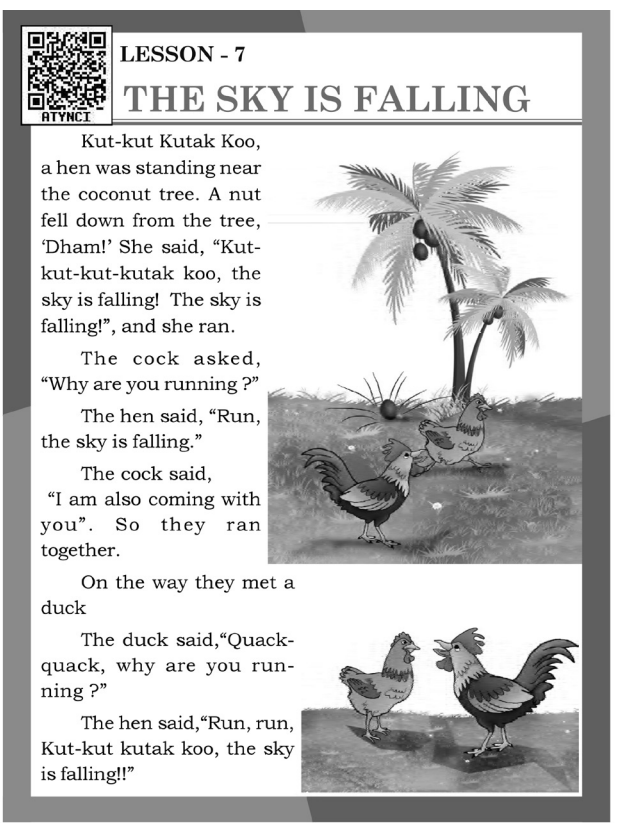

LESSON - 7

THE SKY IS FALLING

Kut-kut Kutak Koo, a hen was standing near the coconut tree. A nut fell down from the tree, 'Dham!' She said, "Kut-kut-kut-kutak koo, the sky is falling! The sky is falling!", and she ran.

The cock asked, "Why are you running ?"

The hen said, "Run, the sky is falling."

The cock said, "I am also coming with you". So they ran together.

On the way they met a duck

The duck said,"Quack-quack, why are you running ?"

The hen said,"Run, run, Kut-kut kutak koo, the sky is falling!!"

तीसरा चरण

शिक्षिका ने कहा, "इस कहानी को हम नाटक के रूप में प्रस्तुत करेंगे। अगले दिन इस कहानी को 3 समूहों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।" शिक्षिका ने पाँच-पाँच बच्चों के तीन समूह बनाए, और उन्हें अलग-अलग पात्रों की भूमिका बाँट दी। बच्चों से अपने-अपने संवाद को कहानी में खोजकर उसके नीचे लाइन खींचने के लिए कहा गया। इस कार्य में शिक्षिका ने बच्चों की मदद की, और संवादों को हावभाव के साथ बोलकर भी बताया। इसके बाद उन्होंने सभी बच्चों को अपने-अपने संवाद की तैयारी करके आने के लिए कहा।

प्रस्तुतीकरण

शिक्षिका ने सभी पात्रों (hen, cock, duck, rabbit, fox) के नाम की एक-एक पट्टी तैयार की। समूह के सभी बच्चों को यह पट्टी दी गई। पहले समूह के पाँचों बच्चे अपने-अपने नाम की पट्टी लेकर लाइन से खड़े हो गए ताकि बाक़ी सभी बच्चों को यह समझ आ सके कि कौन, किस भूमिका में है। शिक्षिका ने सूत्रधार की भूमिका निभाई, और कहानी शुरू की। सभी बच्चों ने अपनी बारी पर अपने-अपने संवाद को हावभाव के साथ बोला। इसी तरह बाक़ी दो समूहों का प्रस्तुतीकरण हुआ।

पारुल बत्रा, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

यहाँ जो बच्चे पढ़ने में संघर्ष कर रहे थे, वे भी बड़ी सहजता से अपने संवादों को अँग्रेज़ी में बोल रहे थे क्योंकि हावभाव के साथ संवाद प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने उसे बार-बार पढ़कर तैयारी की थी।

वैसे यह आवश्यक नहीं कि बच्चे बिना देखे ही अपने संवाद को बोलें। बच्चे किताब लेकर भी खड़े हो सकते हैं जिसमें उन्होंने अपने संवाद को रेखांकित कर रखा है, या वे काग़ज़ लेकर भी खड़े हो सकते हैं जिसमें सभी के संवाद लिखे हों, और उनका ख़ुद का संवाद अलग रंग में लिखा हो।

इसी तरह कविता की अलग-अलग पंक्ति या पद के साथ भी काम किया जा सकता है।

2. व्यापक पठन

व्यापक पठन का उद्देश्य बच्चों के पठन को विस्तार देना है। इसमें बच्चे किसी पाठ को एक बार पढ़ने के बाद दूसरे पाठ को पढ़ते हैं। इस तरह एक के बाद एक अलग-अलग पाठों को नियमित रूप से पढ़ते रहने से पठन कौशल बेहतर होता जाता है। ऊपर पाँचवीं कक्षा के बच्चों के साथ कहानी 'The Sky Is Falling' पर शिक्षिका ने विभिन्न काम किए। जैसे– बच्चों के पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए मौखिक बातचीत, चित्रों पर बातचीत, कोड मिक्सिंग और कोड स्विचिंग का इस्तेमाल करते हुए कहानी सुनाना, सवाल पूछना, कहानी के पात्रों के संवाद बोर्ड पर लिखकर बच्चों को हावभाव के साथ पढ़ने के लिए कहना, और अन्त में कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करवाना।

इसके बाद इस कहानी में आए पात्रों के बारे में दूसरी कहानी के ज़रिए चर्चा करना, और बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना व्यापक पठन की दृष्टि से कारगर हो सकता है।

व्यापक पठन को प्रोत्साहित करने के लिए उस पाठ या विषयवस्तु से सम्बन्धित दूसरी सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

बच्चों को ज़्यादा-से-ज़्यादा किताब पढ़ने हेतु प्रेरित करने के लिए इस तरह बातचीत की जा सकती है :

"बच्चो! हमने एक कहानी 'The Sky Is Falling' को पढ़ा, और उसे नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। बताइए, इस कहानी में कौन-कौन हैं? क्या आपने hen के बारे में कोई दूसरी कहानी या कविता पढ़ी है? हमारे पुस्तकालय hen के बारे में दो मज़ेदार कहानियाँ हैं। एक है— *Rosie's Walk* और दूसरी *Lalu and Peelu.* आप इन्हें ज़रूर पढ़ना फिर हम उनपर बात करेंगे।"

इसी तरह,

"क्या आपने duck के बारे में कोई दूसरी कहानी पढ़ी है? मैं *The Ugly Duckling, Super Duck* और *Farmer Duck* नाम की कुछ कहानियों की किताबों को जानती हूँ। आप इन्हें भी ज़रूर पढ़ना। अब आप rabbit, fox और lion के बारे में कहानी या कविता खोजकर पढ़ना, बाद में इन सबके बारे में हम बात करेंगे।"

व्यापक पठन को प्रोत्साहित करने के लिए मुखर वाचन

प्रायः यह देखा गया है कि शिक्षक जिन किताबों का मुखर वाचन करते हैं, बच्चों के बीच उनकी माँग बढ़ जाती है और वे उन्हें घर ले जाना चाहते हैं। इस तरह, बच्चे धीरे-धीरे बहुत-सी किताबों को पढ़ लेते हैं, और उनमें पढ़ने की आदत विकसित होती है। पढ़ने से मिलने वाला आनन्द एवं पढ़ पाने की सफलता उन्हें और ज़्यादा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

व्यापक पठन को प्रोत्साहित करने के लिए स्वतंत्र पठन

शिक्षक बच्चों को पुस्तकालय कालांश में पुस्तकालय ले जाएँ, और बच्चों को अपनी-अपनी पसन्द की किताब को चुनकर पढ़ने को कहें। किताब पढ़ने के लिए उन्हें पर्याप्त समय भी दिया जाए। इस दौरान शिक्षक बच्चों के पास जाकर आवश्यकतानुसार मदद भी कर सकते हैं।

पुस्तकों से सम्बन्धित क्विज़ का आयोजन

किसी दिन शिक्षक पुस्तकालय कालांश में क्विज़ का आयोजन कर सकते हैं। वे पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों के आधार पर कुछ सवाल तैयार कर सकते हैं, और बच्चों से पूछ सकते हैं। जैसे—

- एक कहानी है जिसमें एक मटको नाम की मोटी भेड़ दुबली होने के लिए कई उपाय करती है पर वह दुबली नहीं हो सकी। उस कहानी का नाम क्या है? *(मैं ऐसी ही हूँ)*
- कौन-सी कहानी में एक आलसी भैंस के सींग में चिड़िया घोंसला बना लेती है? *(भभो भैंस)*
- उस कहानी का नाम बताओ जिसमें मुर्ग़ी का बच्चा मिर्ची खा लेता है? *(लालू और पीलू)*

समेकन

पढ़ने के लिए ध्वनि संकेतों को पहचानना ज़रूरी है। इसलिए किसी पाठ को पढ़कर समझना, सुनकर समझने जितना सहज नहीं होता है। पढ़कर समझने के लिए धाराप्रवाह पठन के साथ-साथ उस भाषा का ज्ञान जिसमें वह पाठ लिखा गया है, शब्दों का ज्ञान, सन्दर्भ की समझ, आदि बातें भी पाठ को समझने के लिए ज़रूरी हैं। धाराप्रवाह पठन कौशल को योजनाबद्ध तरीक़े से सिखाया जाना चाहिए। पाठ योजना बनाते समय शिक्षक को मौखिक चर्चा, शब्दावली, पठन बोध व लेखन, आदि कौशलों के साथ-साथ धाराप्रवाह पठन के लिए भी कुछ अभ्यास या गतिविधियाँ शामिल करना

चित्र : मुकेश मालवीय

चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में अलग-अलग सन्दर्भों, गतिविधियों एवं अभ्यासों के माध्यम से बार-बार अक्षरों व शब्दों को देखने, उनसे जूझने और उनको पहचानने का अवसर बच्चों को दिया जा सकता है। कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के बच्चों के साथ शिक्षक द्वारा पाठ के किसी अंश को उचित गति, शुद्धता एवं हावभाव से पढ़कर सुनाना, और बच्चों को भी सुनाने के लिए कहना हो सकता है। इसी तरह, कहानी शिक्षण के दौरान किसी पात्र के संवाद को बोर्ड पर लिखकर बच्चों को हावभाव के साथ पढ़ने के लिए कहना, किसी एक संवाद को अलग-अलग भावों (आश्चर्य, क्रोध, प्रशंसा, उपहास, आदि) के साथ पढ़ने के लिए कहना बच्चों के लिए काफ़ी असरदार साबित हो सकता है। कहानी का नाट्य रूपान्तरण और प्रस्तुतीकरण बच्चों में दूसरे भाषाई कौशलों के साथ धाराप्रवाह पठन कौशल विकसित करने की दिशा में बहुत प्रभावी होता है। इसमें पात्रों के अनुसार बच्चों को भूमिकाएँ बाँटना, कहानी से अपना-अपना संवाद खोजना या बनाना, उसे लिखना, प्रस्तुत करने की तैयारी में बार-बार पढ़ना, शिक्षक की मदद लेना, आदि शामिल हैं। इसी तरह, कविता शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा लय के साथ पढ़कर सुनाना, बच्चों को कविता की लय जानने में मदद करता है क्योंकि एक कविता को लयबद्ध तरीक़े से पढ़ना किसी कहानी को पढ़ने से अलग है।

अन्त में, दूसरे किसी भी कौशल की तरह धाराप्रवाह पठन कौशल विकसित करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह अभ्यास यांत्रिक और उबाऊ न हो, इसके लिए शिक्षक को अलग-अलग तरह की प्रक्रियाओं, अभ्यासों और गतिविधियों को कक्षा के स्तर अनुरूप खोजना पड़ता है।

सन्दर्भ

1. Rasinski, T. V. (2012). 'Why Reading Fluency Should Be Hot!' *The Reading Teacher*, 65, 516-522.
2. David Kinnane. 'The Forgotten Reading skills: fluency, and why it matters'.
3. Alan E Farstrup and S Jay Samuels (ed.). *What Research Has to Say About Reading Instruction*.
4. National Reading Panel Report

रविशेखर वर्मा दो दशक से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। आपने एक दशक शासकीय स्कूल में अध्यापन किया है। तक़रीबन 5 साल रूम-टू-रीड इंडिया ट्रस्ट में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्य किया है। फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी में फ़ील्ड फ़ैकल्टी के तौर पर कार्यरत हैं।

सम्पर्क : ravishekhar.verma@azimpremjifoundation.org